

संरक्षक—श्रीधुत हरगोविन्ददास रामजी शाह—मुंबई

॥ अहम् ॥

ॐ ॥ णमो त्थु णं तमणस्स भगवओ महावीरस्स ॥

भाग १]

जैन

साहित्य संशोधक

जैन इतिहास, साहित्य, तत्त्वज्ञान आदि विषयक विविध नियन्ध-संग्रह ।

संपादक
मुनिराज श्रीजिनविजयजी ।

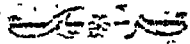
प्रकाशक—

जैन साहित्य संशोधक समाज ।

टि० भारत जैन विद्यालय, फर्गुसन कालेज रोड, पूना सिटी ।

वार्षिक मूल्य ५ रु०] [प्रतिअंक मूल्य १॥ रु०

विषय-सूचि ।



(हिन्दी लेख विभाग)

१ जनेन्द्र व्याकरण और आचार्य देवतन्त्री । लेखक—श्रीयुक्त पं. नाथूरामजी प्रेमी, संपा- दक—जैनाहितपो ६३-८९
२ शब्दहारित महाभाष्यकी रीज—ले० श्रीयुक्त बाबू दुर्गल किशोरजी मुख्तार ... ८८-९५
३ तीर्थयात्राके लिये निकलनेवाले सव्वाका वर्णन (सम्पादकीय) ९३-१०७
४ जललमेरके पद्योंके सव्वाका वर्णन (सम्पादकीय) १०७-११२
५ शोकसमाचार.
(१) डॉ० सुतीशचन्द्र विद्याभरण ... ११३
(२) प्रो० सी. वी. राजवाडे ... ११४
(३) लो० बाल गंगाधर तिलक ... ११५
६ चित्र परिचय ११६

(गुजराती लेख विभाग)

१ सोमप्रभाचार्य विरचित कुमारपाल प्रतिबोध. (सम्पादकीय) ७७-८४
२ डॉ० हर्षत जेकादीनी जैनसूत्रोनी प्रस्तावना. अनुवादक—शाह अम्यालाल चतुरभाई, बी. ए. (जैन सा. सं. कार्यालय तरफथी) ६९
३ साहित्य-समालोचन
(१) धनपालकृत भविष्यदुत्तकथा ... ९७
(२) लुरीश्वर धने सन्नद्ध ... ९८
(३) तस्वार्थमपिशिष्टहु भाषान्तर ... १००
—सुबई युनिवर्सिटीना एम. ए. क्लासना अर्थमानप्री कोस ... १०३
—पंजाब युनिवर्सिटीना जैनसाहित्य १०४

अवश्य पढ़िए

जैन साहित्य संशोधक समाजकी तरफसे शोध हो एक जैन प्राकृत-संस्कृत ग्रन्थमाला निकलने-वाली है जिसमें जैन साहित्यके उत्तमोत्तम, प्राचीन और अलभ्य-दुर्लभ ग्रन्थ प्रकट किये जायेंगे। इन ग्रन्थोंमें जैन आगम, सूत्र, नियुक्ति, ज्ञानि, भाष्य, वृत्ति, न्याय, व्याकरण, काव्य, कोष, साहित्य, अलंकार, चरित्र, पुराण, प्रधान इत्यादि सब प्रकारके ग्रन्थ रहेंगे। ये सब ग्रन्थ नई पद्धतिमें, जैन और अजैन विद्वानोंके द्वारा संपादित हो कर छपेंगे। जैन साहित्यके देखनेकी अभिलषित्वा लोगोंमें दिन पर दिन बढ़ती जा रही है परन्तु एक तो अभी तक उत्तम प्रकारसे जैन ग्रन्थ छपे ही नहीं हैं और जो जैले वैसे छपे हैं उनका प्राप्ति भी सब साधारणके लिये दुःसाध्य ही नहीं परंतु असाध्य ही रहा है। इस लिये अनेक विद्वानोंके आग्रहसे इस संस्थान यह काम करनेका विचार किया है।

जो सज्जन इस ग्रन्थमालेके स्थायी ग्राहक बनना चाहेंगे उन्हें सब ग्रन्थ पाना किमतसे याने ३ मूल्यमें दिये जायेंगे। स्थायी ग्राहक बननेके लिये १ रुपया प्रथम प्रवेश फाके लिये भेजना चाहिए। प्रथम ज्यों ज्यों छपते जायेंगे त्यों त्यों बी. पी. करके भेज जायेंगे।

कागज, साइज, छपाई, सफाई इत्यादि सब काम उत्तम प्रकारका होगा। विशेष हाल जाननेके लिये जयपुरी पत्रद्वारा पूछिए।

पत्रग्रन्थवहार करनेका पता—

व्यवस्थापक

जैन साहित्य संशोधक कार्यालय,

८० भारत-जैन विद्यालय,

पूना-सांठी.

विद्वद्दिग्गज नाम प्रार्थित जैनग्रन्थमाली ।